L.N. MITHILA UNIVERSITY
DARBHANGA (BIHAR)
B.A PART- O III
PAPER - VI
PSYCHOLOGY (HONOURS)

Dr. Pramod Kumar Sahu.
Assit. Professor.
Super Teacher
V.S.J. College Rajnagar.
MADHUBANI (BIHAR)
pramodkumar...2018@gmail.com

TOPIC - Characteristics of Organisational Behaviour.

संगठनात्मक व्यवहार एक स्वतंत्र विज्ञान (Independent science) नहीं है। बल्कि एक ऐसा अध्ययन क्षेत्र (Field) है। जिसमें मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, मानवशास्त्र, अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र आदि के तथ्यों का अनुपम समन्वय देखने को मिलता है। इस क्षेत्र में कार्यरत वैज्ञानिकों के अनुसार इस क्षेत्र के कुछ खास-खास विशेषताओं पर प्रकाश डाला गया है। जिससे इसका स्वरूप अन्य संबंधित विज्ञानों से कुछ भिन्न हो पाता है। ऐसी विशेषताएँ निम्नांकित हैं।

(I) संगठनात्मक व्यवहार एक शास्त्र नहीं है। बल्कि अध्ययन का एक क्षेत्र है।

संगठनात्मक व्यवहार को विशेष अध्ययन का एक क्षेत्र माना गया है। न कि इसे एक शास्त्र (discipline) माना गया है। शास्त्र से तात्पर्य एक ऐसे स्वीकृत विज्ञान (accepted science) से होता है। जिसकी अपनी सैद्धांतिक नींव होती है। तथा जिसके आधार पर शोध एवं विश्लेषण किए जाते हैं। संगठनात्मक व्यवहार की भी एक विस्तृत आधार होता है। तथा इसकी उत्पत्ति नवीन है। एवं प्रकृति अंतरशास्त्रीय है अतः इसे एक स्वतंत्र शास्त्र के रूप में मान्यता नहीं प्राप्त हुई है।

(II) संगठनात्मक व्यवहार अन्तरशास्त्रीय क्षेत्र है।

संगठनात्मक व्यवहार मूलतः एक अंतरशास्त्रीय क्षेत्र है। जिसमें विभिन्न शास्त्रों से संगत ज्ञानों को विशिष्ट उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए समन्वित किया जाता है। संगठनात्मक व्यवहार मुख्यरूप से मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा मानवशास्त्र के ज्ञानों पर अधिक निर्भर करता है इसके अलावा इस अध्ययन-क्षेत्र में अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, इतिहास एवं कानून आदि से भी तथ्यों को लिया जाता है। तथा उसके आधार पर

किसी संगठन में मानवीय समस्याओं का अध्ययन किया जाता है।

(iii) संगठनात्मक व्यवहार एक प्रयुक्त क्षेत्र है।

इस क्षेत्र में किए जा रहे शोधों का मुख्य उद्देश्य संगठनात्मक समस्याओं खासकर मानव-व्यवहार से संबंधित समस्याओं का अध्ययन करके उसके व्यावहारिक पहलू की उपयोगिता पर बल डालना होता है। इस क्षेत्र में शोधकर्ता वास्तविक संगठनों में वास्तविक घटनाओं को समझने की कोशिश करते हैं। और प्राप्त परिणामों को उसकी उपयोगिता के साथ संबंधों को संपादित करते हैं।

(iv) संगठनात्मक व्यवहार का दृष्टिकोण मानवतावादी एवं आशावादी है।

संगठनात्मक व्यवहार में मानवीय समस्याओं का अध्ययन मानवतावादी दृष्टिकोण से किया जाता है इसमें संगठन के सदस्यों की आवश्यकताओं, अभिप्रेरणाओं एवं कल्याण का अधिक से अधिक ध्यान रखा जाता है। इसमें सदस्यों को एक मनोशक्ति एवं सामाजिक प्राणी समझा जाता है। और इस दृष्टिकोण से उनका अध्ययन किया जाता है। साथ-ही साथ, इस क्षेत्र में यह भी कल्पना की जाती है कि संगठन के सदस्यों में स्वतंत्र, सर्जनात्मक तथा उत्पादक होने की एक निहित क्षमता होती है। जिससे संगठन के उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायता होती है।

(v) संगठनात्मक व्यवहार की नींव वैज्ञानिक विधि होती है।

संगठनात्मक व्यवहार के अध्ययन एवं शोध में वैज्ञानिक विधि का उपयोग किया जाता है। इन वैज्ञानिक विधियों की भाँति संगठनात्मक व्यवहार के भौतिक शास्त्रों की विधियाँ हैं। इन विधियों में शोध प्रश्नों को तैयार करने में विभिन्न सिद्धांतों एवं तर्क का सहारा लिया जाता है। तथा उनके उत्तरों को ढूँढने में वस्तुनिष्ठ आँकड़ों का तथा उसके उपयोग भी किया जाता है।

(vi) संगठनात्मक व्यवहार का एक अमूर्त विश्लेषण-स्तर होता है। एक विशिष्ट अध्ययन क्षेत्र के रूप में

III

संगठनात्मक व्यवहार व्यक्तियों, समूहों एवं औपचारिक संगठनों का गहन विश्लेषण करता है। विश्लेषण के इन तीनों स्तर को समान रूप से महत्वपूर्ण माना जाता है और समान ध्यान दिया जाता है। पहले स्तर पर अर्थात व्यक्ति के विश्लेषण के स्तर पर उन संगठनात्मक बातों का पता लगाया जाता है जिससे व्यक्ति की मनोवृत्ति, प्रत्यक्षण, अभिप्रेरणा एवं व्यक्तित्व आदि प्रभावित होती है। दूसरे स्तर पर अर्थात सामूहिक स्तर पर कुछ उन विशेषताओं का अध्ययन किया जाता जो सदस्यों के कार्यसमूह, समग्र रूप से दिखलाते हैं कार्यसमूह क्या सोचता है, कौन-सा लक्ष्य निर्धारित करता है, कैसे व्यवहार करता है आदि प्रश्नों का अध्ययन किया जाता है। तीसरे स्तर पर, संगठन की उन विशेषताओं का अध्ययन किया जाता है जिसका स्पष्ट प्रभाव उनके सदस्यों पर होता है। इन तीनों स्तर पर किए गए विश्लेषण एक-दूसरे से स्वतंत्र न होकर एक-दूसरे के पूरक होते हैं। स्पष्ट हुआ कि संगठनात्मक व्यवहार की कुछ स्पष्ट विशेषताएं हैं जिनके आधार पर इसके स्वरूप का पता चलता है।

V.S.J. College - Rajnagar.
Dr. Pramod Kumar Sahu.
Date - 04/07/2020.
Psychology (H)

Scanned with CamScanner